Navbharat Times, 26 January 1995, PATNA

आर्य भट्ट की परम्परा में शामिल एक बिहारी प्रतिभा– आनन्द कुमार

प्रतिभा किसी प्रश्रय का मोहताज नही होती। वह हमेशा पत्थरों का सीना तोड़कर प्रकट होती रही है और अपने बलबूते समय और समाज में हस्तक्षेप करती रही है। क्षेत्र विज्ञान का हो या साहित्य का इसकी इस नियति में फर्क नहीं पड़ता।

युवा गणितज्ञ आनंद कुमार भी ऐसी ही प्रतिभाओं में शुमार हैं जिन्हें शुरु से ही विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ा मगर अपनी अथक मेहनत और लगन से उन्होंने आर्यभट्ट, वाराहमिहिर, रामानुजन,सी.वी. रमण और वशिष्ठ नारायण सिंह की पंक्ति में अपना नाम दर्ज करा लिया। गणित की दशकों से अबूझ और अनसुलझी समस्याओं को सुलझाकर और अधूरी पड़ी गणितीय खोजों को विस्तारित कर युवा गणितज्ञ आनंद कुमार ने सबको चौंका दिया।उनकी इन खोजों से प्रभावित होकर विशेष अध्ययन एवं अनुसंधान करने के लिए इंगलैंड के एबर्डीन विश्वविद्यालय, शेफिल्ड, हल और केंट विश्वविद्यालयों के अतिरिक्त कैंब्रिज विश्वविद्याल ने भी आमंत्रित किया था मगर आर्थिक तंगी की वजह से आनंद की यह जरुरी यात्रा पूरी नहीं हो सकी।खैर। यह तो अब बीती बात हो गयी है और तमाम स्वयं सेवी एवं सरकारी संस्थाओं की प्रतिभा अन्वेषी एवं प्रोत्साही भूमिकाओं का इस संदर्भ में पर्दाफाश हो चुका है। मगर जीवन की यात्रा एक संस्थान की यात्रा तक ही सीमित नहीं है।आनंद आज भी गणित की गुत्थियां सुलझाने में लगे हैं और दिन रात लगे हैं।

आनंद कुमार ने 'लिली प्रोपर्टी आफ नंबर्स' की अपनी मौलिक खोज तथा विख्यात गणितज्ञ ए. पोरगेस के शोध को विस्तृत आयाम देने के अतिरिक्त अब तक के गणित के अनसुलझे कई सवालों को सुलझाया है।उनके चार शोध पत्र अब तक विश्व की अनेक महत्वपूर्ण शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। पटना जिले के धनरुआ थाने के देवधा गांव के मूल निवासी आनंद कुमार आज दुनिया के विभिन्न हिस्सो में फैली गणितीय संस्थाओं के सदस्य हैं तथा उनके नियमित संपर्क में हैं। दि मैथेमेटिकल गजट लंदन मे प्रकाशनार्थ उनके दो शोध पत्र हाल ही में

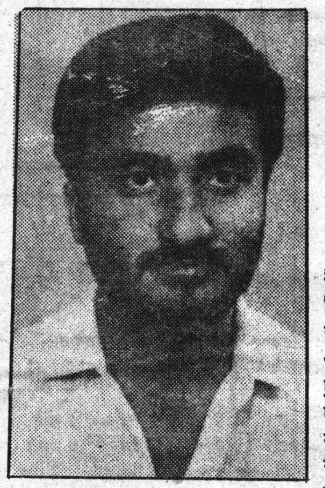

स्वीकृत किये जा चुके है।

एक क्लर्क पिता (राजेन्द्र प्रसाद) तथा साक्षर मां की संतान आनंद कुमार ने गणित की आत्मा में झांकने की जो कोशिश की तो दुनिया के कई यथार्थ भी उनसे टकराये। वह दु:खित होते हुए कहते हैं कि प्रतिभा संरक्षण एवं अन्वेषण के नाम पर कार्यरत स्वयंसेवी संस्थाएं सिर्फ कागजों पर काम रहती हैं। सरकार की रुचि भी इन कामों में नहीं है। ऐसे में जो खुद को जलाने की हिम्मत करे वही कुछ कर सकता है। आनंद यह मानते हैं कि सामाजिक सरोकार के बिना ज्ञान की कोई भी विधा अपना विकास नहीं कर सकती। चाहे वह गणित ही क्यों न हो। आनंद अपनी प्रसिद्धि से जरा भी विचलित हुए बिना यह कहते हैं कि प्रचार और लोकप्रियता से भी जरूरी चीज है आत्मसंतुष्टि और यह एक बड़े जीवन उद्देश्य में शामिल हुए बिना नहीं प्राप्त हो सकती।

गणित के क्षेत्र में रामानुजन से प्रभावित श्री आनंद को बचपन में गणित के प्रति कोई खास लगाव नहीं था। मगर जीवन में नाटकीय घटनाओं को महत्वपूर्ण मानने वाले आनंद ने एक जिद् के तहत गणित को अपनाया और यहां पहुंच गये। अपने काम में जिद् की हद तक लगनशील आनंद जिस चीज की ख्वाहिश करते है उसे हासिल करने के लिए एड़ी चोटी का पसीना एक कर देते हैं। इसी जिद् के तहत उन्होंने गणित जैसे दुरुह विषय को चुना, देवी प्रसाद वर्मा और बालगंगाधर प्रसाद जैसे गणित के गुरुओं को ढूंढा और अपने काम में पिल गये। बी.एन. कालेज से गणित में स्नातक आनंद कुमार पटना विश्वविद्यालय से फिलहाल गणित विषय से ही स्नातकोत्तर कर रहे है।

आनंद को यह बात दु:खित करती है कि वैज्ञानिक या गणितज्ञ प्रयोगशालाओं और किताब के पन्नों से बाहर समाज के मंच पर नहीं आते। आज जबकि समाज में अंधविश्वास, अशिक्षा और पिछड़ापन फैला हुआ है। वैज्ञानिकों–गणितज्ञों की भूमिका बड़ी हो जाती है। अपनी इसी सोच के तहत उन्होंने मीठापुर में रामानुजन स्कूल ऑफ मैथेमेटिक्स नामक संस्थान की स्थापना की है जहां वह स्वयं तो जरूरतमंद लड़कों को नि:शुल्क पढ़ाते ही है शहर के प्राय सभी महत्वपूर्ण गणित शिक्षकों को भी आमंत्रित करते रहते हैं। बी.एन. कालेज गणित के प्राध्यापक बाल गंगाधर प्रसाद हों या वरिष्ठ गणित प्राध्यापक देवी प्रसाद वर्मा या विनय कंठ, विज्ञान महाविद्यालय के शहाबुद्दीन जी हों। सभी इस संस्थान से जुड़कर गणित शिक्षा को लोकप्रिय बनाने में लगे हैं। आनंद कुमार यहां यथा अवसर विभिन्न शैक्षिक सांस्कृतिक विषयों पर गोष्ठियां भी आयोजित करते रहते हैं। वह मानते हैं कि व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करने के लिए सामाजिक सरोकारों से जुडना जरूरी है। आनंद कुमार के साथ एक खास बात यह है कि इनकी पूरी शिक्षा–दीक्ष– बिहार खासकर पटना के माहौल में हुई। कोई कांवेन्टी संस्कार इन्हें नहीं मिला। कहीं कोई विशेष अध्ययन इन्होंने नहीं किया और ऐसे कारामात कर दिखाया जो बड़े–बड़े संस्थानों में पढ़ रहे छात्र भी नहीं दिखा सके। आनंद मानते है कि यद्यपि बिहार में शिक्षा का स्तर गिरा है। पूरा माहौल चौपट हो गया है। मगर उससे भी अधिक गिरावट इच्छा शक्ति में आयी है। अगर छात्रों में इच्छा शक्ति हो और कुछ कर गुजरने की ख्वाहिश हो तो बिहार में भी बहुत कुछ किया जा सकता है।

विद्याभूषण द्विवेदी